Dr Rishi Ranjan
H.D Jain College (Ara)
Deptt of History
M.A Semester- 1
Paper- 3 Early Medieval India

Q. हर्षवर्धन के इतिहास के प्रमुख स्रोतों का उल्लेख करें?

गुप्त साम्राज्य के विघटन के पश्चात उत्तर भारत में जिस राजनीतिक विकेन्द्रीकरण के युग का प्रारम्भ हुआ, हर्षवर्धन के राज्यारोहण के साथ ही उसकी समाप्ति हुई। वर्धन वंश के यशस्वी सम्राट ने अपनी उपाधियों के द्वारा उत्तर भारत के विशाल भूभाग को अपने साम्राज्य के अन्तर्गत संगठित कर लिया तथा अशोक और समुद्रगुप्त जैसे प्रतिभाशाली सम्राटों की भाँति इतिहास में यश अर्जित किया। हर्षवर्धन एक महान विजेता कुशल प्रशासक विद्वान एवं विद्या का उदार संरक्षक था। इस प्रकार उसकी प्रतिभा बहुमुखी थी। अशोक और कनिष्क के समान उसने भी बौद्ध धर्म को राज्याश्रय प्रदान किया।

इस प्रकार उसके व्यक्तित्व में अशोक तथा समुद्रगुप्त इन दोनों महान सम्राटों का समन्वय दिखाई देता है। जिसकी जानकारी हमें तात्कालीन विविध स्रोतों से प्राप्त होती है।

साहित्य ←

हर्षचरित → इस ग्रंथ की रचना सुप्रसिद्ध लेखक बाणभट्ट ने की थी, जो हर्षवर्धन के इतिहास को जानने का सर्वप्रमुख स्रोत है। यह पुस्तक कुल आठ अध्याय में है। जिसमें से अंतिम पाँच अध्याय में सम्राट हर्षवर्धन

का जीवन-चरित लिखा गया है। इससे हम हर्ष के पूर्वजों के विषय में भी जानकारी प्राप्त करते हैं। हर्षचरित में राज्यश्री की खोज के लिए हर्षवर्धन के प्रयास, बौद्ध भिक्षु दिवाकर मित्र से उसकी मुलाकात और राज्यश्री की खोज में हर्ष की सफलता का उल्लेख किया गया है। हर्ष के प्रारम्भिक जीवन राज्यारोहण, दैनिक अभियान के साथ ही साथ यह ग्रन्थ हर्षवर्धन कालीन भारत की राजनीति एवं संस्कृति पर भी प्रचुर प्रकाश डालता है।

कादम्बरी →

यह भी बाणभट्ट की ही कृति है। इसे संस्कृत साहित्य का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास कहा जाता है। इसके अध्ययन से हम हर्षकालीन सामाजिक तथा धार्मिक जीवन का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

आर्य मंजुश्री मूल कल्प →

यह एक प्रसिद्ध महायान बौद्ध ग्रंथ है। सर्वप्रथम गणपति शास्त्री ने 1925 ई० में इसे प्रकाशित किया था। यह पुस्तक हर्षकालीन इतिहास की कुछ घटनाओं पर प्रकाश डालता है। इसमें हर्ष के लिए केवल 'हे' शब्द का प्रयोग किया गया है। किन्तु इस ग्रन्थ में अनेक अनैतिहासिक जानकारियां भी दी गई हैं।

* विदेशी विवरण

ह्वेनसांग तथा उसका विवरण →

चीनी यात्री ह्वेनसांग ने हर्ष के शासन काल में भारत की यात्रा की थी। उसने अपनी यात्रा 29 वर्ष की अवस्था में 629 ई० में प्रारम्भ की। उसने यहाँ सोलह वर्षों तक निवास किया। हर्ष के निमंत्रण पर वह हर्ष के राज्य में लगभग आठ वर्ष तक रहा। कन्नौज की सभा और प्रयाग की महामोक्ष परिषद् की विस्तृत

जानकारी ह्वेनसाँग के यात्रा विवरण में दिया गया। उसका यात्रा विवरण 'सी-यू-की' नाम से प्रसिद्ध है। यह तात्कालीन राजनीति तथा सांस्कृतिक का अध्ययन करने के लिए अत्यन्त उपयोगी है। विदेशी विवरण में इसका वही स्थान है, जो साहित्य में हर्षचरित का। हर्ष के प्रशासन एवं प्रजा कल्याण की भावना का वह प्रशंसक था। अपराधी प्रवृति के लोगों की संख्या कम थी, शारीरिक दण्ड का प्रचलन कम था तथा सामाजिक बहिष्कार एवं अर्थदण्ड के रूप में दण्ड दिया जाता था।

ह्वेनसाँग की जीवन →

इसकी रचना ह्वेनसाँग के मित्र 'हुई-ली' ने की थी। बील द्वारा इसका अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया गया। इससे भी हर्षकालीन इतिहास से सम्बन्धित कई महत्वपूर्ण बातें ज्ञात होती है।

इत्सिंग का विवरण →

हर्षवर्धन के विषय में जानकारी देने वाला अन्तिम चीनी यात्री इत्सिंग था। वह भी बौद्ध-तीर्थ-स्थानों को देखने तथा बौद्ध साहित्य का संकलन करने भारत वर्ष आया था। इसका अंग्रेजी अनुवाद जापानी बौद्ध विद्वान तक्कुसु ने ए रेकार्ड ऑफ द बुद्धिस्ट रेलिजन नाम से प्रस्तुत किया है।

पुरातत्व →

पुरातात्विक साक्ष्यों से भी हर्ष के राज्यकाल के विषय में जानकारी मिलती है। अभी तक हर्ष के चार अभिलेख प्राप्त हुए है। इनमें से दो अभिलेख संस्कृत भाषा में ताम्रपत्र पर किये गये है।

बासखेड़ा का लेख →

यह 1894 ई० में उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर जिले में स्थित बासखेड़ा नामक स्थान से मिला है। जिसमें हर्ष संवत 22 अर्थात 628 ई० की तिथि अंकित है। यह अभिलेख तिथि की दृष्टि से पहला है। इससे यह पता लगता है कि हर्ष ने अहिच्छत्र भुक्ति के अंगदीया विषय का मर्कटसागर नामक गाँव सभी करों से मुक्त कर बालचन्द्र तथा ब्रह्मस्वामी को दान में दिया था। इसमें हर्षकालीन शासन के अनेक प्रदेशों तथा पदाधिकारियों के नाम ज्ञात होते हैं। साथ ही साथ राज्यवर्धन द्वारा मालवा के शासक देवगुप्त पर विजय तथा अंततः गौड़ नरेश शशांक द्वारा उसकी हत्या की जानकारी भी इस लेख से मिलती है।

मधुबन का लेख →

मधुबन उत्तर प्रदेश में मऊ जिले की घोसी तहसील में स्थित है। यहाँ से हर्ष संवत 25 अर्थात 631 ई० का लेख मिला है। इसमें हर्ष द्वारा श्रावस्ती भुक्ति के सोमकुण्डा नामक ग्राम को दान में देने का विवरण है। लेख के अन्य बातें बासखेड़ा वाले लेख के ही समान है। साथ ही यह हर्षवर्धन की पूर्वजों के धार्मिक तथा उसके आराध्य देवताओं की भी जानकारी देता है।

ऐहोल का लेख →

यह चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय का है। जिसकी तिथि 633-34 ई० है, इस में हर्ष और पुलकेशिन के बीच होने वाले युद्ध का वर्णन है। इस लेख को रचना पुलकेशिन के दरबारी कवि रविकीर्ति ने की थी।

मुहरें ⇒

हर्ष की दो मुहरें नालन्दा तथा सोनपत से प्राप्त होती है। पहली मिट्टी तथा दूसरी ताँबे की है। इन पर लेख खुदे हुए हैं जिनमें महाराज राज्यवर्धन प्रथम के समय से लेकर हर्षवर्धन तक की वंशावली मिलती है। सोनपत मुहर में ही हमें हर्ष का दूसरा नाम 'हर्षवर्धन' प्राप्त होता है। के० पी० जायसवाल ने हर्ष का एक स्वर्ण सिक्का प्रकाशित किया है। इसके मुख भाग पर परमभट्टारक महाराजाधिराज श्री हर्षदेव अंकित है तथा पृष्ठ भाग पर 'आ महेश्वर' की आकृति है।

समीक्षा ⇒

इस प्रकार से हम देखते हैं कि हर्षवर्धन को जानने के लिए हमारे पास प्रचुर मात्रा में स्रोत उपलब्ध है। लेकिन इन स्रोतों का इस्तेमाल हमें बहुत ही सम्भल कर करना होगा क्योंकि कुछ बातों खासतौर साहित्यिक स्रोत में जोड़ दी गई है, जैसे की ह्वेनसांग कहता है कि हर्ष के राज्य में चोरी-अपराध नहीं है। शासन विधान कड़ा है न्याय व्यवस्था सरल है, बेगारी नहीं है लेकिन ह्वेनसांग की यह बात स्पष्ट नहीं हो पाती है, क्योंकि बेगारी न ही होने के बावजूद विष्टी की चर्चा समस्त स्रोतों में मिलती है। व्यापार का ह्रास हो गया तो आर्थिक समृद्धता क्या रही होगी? और जिस ह्वेनसांग के समान भारत भ्रमण में तीन-2 बार लूट लिए गया, और साथ ही ह्वेनसांग को कन्नौज के धर्मसभा में हर्ष की मौजूदगी में छुरे से हमला किया गया। वह ह्वेनसांग क्या कहेगा की अपराध कम है, फिर भी इन तमाम बातों के बावजूद ह्वेनसांग की यात्रा-विवरण महान है।

तुलनात्मक रूप से यह वंश अन्य वंश की तुलना में अधिक चर्चित वंश रहा है। इसकी मुख्य वजह है विख्यात शासक हर्षवर्धन की मौजूदगी।

[illegible] बारे में जानकारी के लिए स्रोत भी काफी हैं बहुत अधिक संख्या में ताम्रपत्र की प्राप्ति होती है, इसमें बाँस खेड़ा ताम्रपत्र, नालन्दा ताम्रपत्र सोनीपत ताम्रपत्र से स्वयं हर्ष वंश और हर्ष से सम्बन्धित है। इसलिये ताम्रपत्र इतिहास बनाने में महत्त्वपूर्ण है। ऐसे ही हर्षकालीन सिक्के भी पुरातात्विक स्रोत के रूप में उपलब्ध है। केवल पुरातात्विक स्रोत ही नहीं साहित्यिक स्रोत की संख्या भी अधिक है। देशी साहित्य के साथ-2 विदेशी साहित्य एवं पुरवर्ती साहित्य कल्हण की राजतरंगिणी भी हर्षवर्धन के इतिहास को जानने के लिए मददगार है। ऐसे स्रोत अन्य देश और अन्य राजा के संदर्भ में उपलब्ध नहीं होते हैं। इसलिए स्रोतों की विशिष्टता के कारण यह वंश और वंश के शासकों के अलावे हर्षवर्धन अपने समकालीन राजाओं से कहीं अधिक वर्णित और विख्यात है।